संतान-प्राप्ति योग रिपोर्ट

संतान-प्राप्ति के योग, शुभ समय, संतान-सुख व शास्त्रीय उपाय

श्री अभय शर्मा (काल्पनिक) जी हेतु व्यक्तिगत रिपोर्ट

नाम	अभय शर्मा (काल्पनिक)
जन्म तिथि व समय	12 जुलाई 1992 · 09:45
जन्म स्थान	जयपुर
लग्न · राशि · नक्षत्र	सिंह · वृश्चिक · ज्येष्ठा
लग्न नक्षत्र	पूर्वाफाल्गुनी · चरण 2 (स्वामी शुक्र)
वर्तमान दशा	सूर्य महादशा (2023–2029)
रिपोर्ट तिथि	18 नवम्बर 2026 · रात्रि 8:32

॥ पारस वाणी ॥

parasvani · वैदिक ज्ञान, आधुनिक तकनीक

यह रिपोर्ट खगोलीय Swiss Ephemeris (लाहिरी अयनांश) गणना पर आधारित है

❖ ✦ ❖

जन्म कुंडली — ग्रह स्थिति एवं प्रभाव

कुं ड ली प रि च य

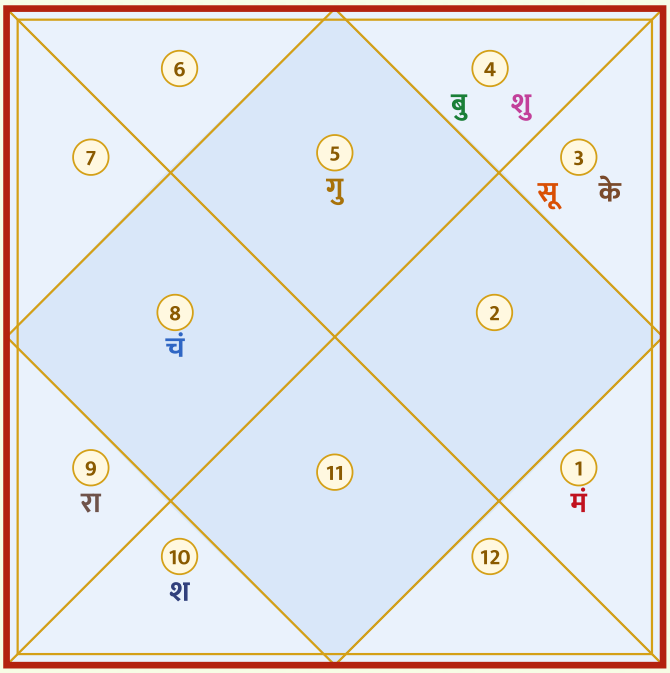

जन्म-कुंडली (उत्तर भारतीय पद्धति) · लाहिरी अयनांश

ग्रह	राशि	भाव	क्षेत्र-प्रभाव
सूर्य	मिथुन	11	आत्मबल व प्रतिष्ठा — लाभ व आय
चंद्र	वृश्चिक	4	मन व भावनाएँ — सुख व माता
मंगल	मेष	9	ऊर्जा व साहस — भाग्य व धर्म
बुध	कर्क	12	बुद्धि व व्यापार — व्यय व अध्यात्म
गुरु	**सिंह**	**1**	**ज्ञान व भाग्य — व्यक्तित्व व स्वास्थ्य**
शुक्र	कर्क	12	सुख व कला — व्यय व अध्यात्म
शनि (वक्री)	मकर	6	कर्म व अनुशासन — सेवा व प्रतिस्पर्धा
राहु (वक्री)	धनु	5	महत्वाकांक्षा व नवाचार — बुद्धि व संतान
केतु (वक्री)	मिथुन	11	अध्यात्म व मोक्ष — लाभ व आय

❖ ✦ ❖

विंशोत्तरी दशा — अंतर्दशा तालिकाएँ

अभी चल रही वअगली महादशा · वर्तमान ◀ चिह्न से

सूर्य महादशा ◀
19/04/2023 – 19/04/2029

अंतर्दशा	से	तक
सूर्य	19/04/2023	07/08/2023
चंद्र	07/08/2023	06/02/2024
मंगल	06/02/2024	12/06/2024
राहु	12/06/2024	07/05/2025
गुरु	07/05/2025	23/02/2026
शनि ◀	**23/02/2026**	**05/02/2027**
बुध	05/02/2027	13/12/2027
केतु	13/12/2027	19/04/2028
शुक्र	19/04/2028	19/04/2029

चंद्र महादशा
19/04/2029 – 19/04/2039

अंतर्दशा	से	तक
चंद्र	19/04/2029	17/02/2030
मंगल	17/02/2030	18/09/2030
राहु	18/09/2030	19/03/2032
गुरु	19/03/2032	19/07/2033
शनि	19/07/2033	17/02/2035
बुध	17/02/2035	19/07/2036
केतु	19/07/2036	17/02/2037
शुक्र	17/02/2037	19/10/2038
सूर्य	19/10/2038	19/04/2039

❖ ✦ ❖

योगिनी दशा — अंतर-योगिनी तालिकाएँ

अभी चल रही वअगली योगिनी · वर्तमान ◀ चिह्न से

भद्रिका योगिनी ◀
स्वामी बुध · 5 वर्ष · 20/08/2024 – 20/08/2029

अंतर-योगिनी	से	तक
भद्रिका	20/08/2024	01/05/2025
उल्का	01/05/2025	01/03/2026
सिद्धा ◀	**01/03/2026**	**19/02/2027**
संकटा	19/02/2027	31/03/2028
मंगला	31/03/2028	21/05/2028
पिंगला	21/05/2028	30/08/2028
धान्या	30/08/2028	30/01/2029
भ्रामरी	30/01/2029	20/08/2029

उल्का योगिनी
स्वामी शनि · 6 वर्ष · 20/08/2029 – 21/08/2035

अंतर-योगिनी	से	तक
उल्का	20/08/2029	21/08/2030
सिद्धा	21/08/2030	21/10/2031
संकटा	21/10/2031	19/02/2033
मंगला	19/02/2033	21/04/2033
पिंगला	21/04/2033	20/08/2033
धान्या	20/08/2033	19/02/2034
भ्रामरी	19/02/2034	21/10/2034
भद्रिका	21/10/2034	21/08/2035

❖ ✦ ❖

संतान-सुख और कुंडली — भूमिका

अ ध्या य 1

अभय शर्मा जी, संतान का प्रश्न जीवन के सबसे गहरे प्रश्नों में से एक है — और कुंडली इसे केवल योग या दोष के रूप में नहीं, बल्कि आपके पूरे जीवन-प्रवाह के हिस्से के रूप में देखती है। आपकी कुंडली में संतान-सुख के संकेत हैं, और उन्हें समझने के लिए पहले यह जानना ज़रूरी है कि ज्योतिष इस विषय को किन आधारों पर परखता है।

ज्योतिष और संतान — तीन मुख्य आधार

पराशरी परंपरा में संतान-विचार तीन स्तंभों पर टिका है:

• **पंचम भाव** — यह संतान का मूल भाव है; इसकी स्थिति, यहाँ बैठे ग्रह और इस पर पड़ने वाली दृष्टियाँ संतान-सुख का पहला संकेत देती हैं।

• **गुरु** — यह संतान का नैसर्गिक कारक है; चाहे कुंडली में कहीं भी हो, गुरु की स्थिति और बल संतान-योग को पक्का या कमज़ोर करती है।

• **सप्तमांश (D7)** — यह वर्ग-कुंडली विशेष रूप से संतान और वंश-वृद्धि के लिए बनाई जाती है; D1 में जो दिखे, D7 उसकी पुष्टि या सुधार करता है।

इन तीनों के साथ-साथ **चल रही महादशा-अंतर्दशा** और **गुरु का गोचर** यह तय करते हैं कि समय कब अनुकूल है।

आपकी कुंडली का संक्षिप्त परिचय

आप अभी 34 वर्ष की आयु में हैं — यह जीवन का वह पड़ाव है जब गृहस्थी जम चुकी होती है और संतान-सुख का प्रश्न स्वाभाविक रूप से मन में आता है। **आपकी कुंडली सिंह लग्न की है**, और पंचम भाव धनु राशि में पड़ता है। गुरु — जो संतान के कारक भी हैं और पंचमेश भी — आपके लग्न भाव में बैठे हैं, और उनकी अवस्था युवा है, यानी वे अपना फल देने में सक्षम हैं। यह एक महत्वपूर्ण और आशाजनक स्थिति है।

इस रिपोर्ट का उद्देश्य

यह रिपोर्ट आपको डराने के लिए नहीं, दिशा देने के लिए है। जहाँ कुंडली शुभ संकेत दे रही है, वह खुलकर बताऊँगी; जहाँ धैर्य की ज़रूरत है, वह भी स्पष्ट करूँगी — साथ में समय और उपाय भी। संतान-सुख में कभी-कभी विलंब होता है, पर "नहीं होगा" कुंडली की भाषा बहुत कम बोलती है। आपकी कुंडली वह भाषा नहीं बोल रही।

❖ ✦ ❖

पंचम भाव — संतान का मूल आधार

अ ध्या य 2

आपकी कुंडली में **पंचम भाव धनु राशि में है**, और इसके भावेश **गुरु** हैं — जो एक साथ पंचमेश भी हैं और संतान के नैसर्गिक कारक भी। यह संयोग विशेष महत्व रखता है क्योंकि जब भावेश और विषय-कारक एक ही ग्रह हों, तो उस भाव का फल उसी ग्रह की स्थिति पर केंद्रित हो जाता है।

पंचमेश गुरु — स्थिति और बल

गुरु आपके लग्न भाव (भाव 1) में सिंह राशि में बैठे हैं — मित्र राशि में, और उनकी अवस्था युवा है। षड्बल में उनका बल 9.49 रूप है, जो पराशर के न्यूनतम 6.5 रूप से काफ़ी ऊपर है। यानी **गुरु बलवान और फल देने में पूरी तरह सक्षम हैं।** लग्न में बैठे पंचमेश का यह अर्थ है कि संतान-सुख आपकी पहचान और जीवन-यात्रा से गहराई से जुड़ा है।

गुरु की **लग्न से पाँचवें भाव पर दृष्टि** भी है — अर्थात वे पंचम भाव को सीधे देख रहे हैं। पंचमेश का अपने ही भाव पर दृष्टि डालना शास्त्र में शुभ माना गया है; यह संतान-योग को और पुख्ता करता है।

पंचम भाव पर दृष्टियाँ

पंचम भाव (धनु) पर इस समय कई दृष्टियाँ पड़ रही हैं:
• **सूर्य की दृष्टि** — सूर्य भाव 11 से पंचम को देख रहे हैं। सूर्य यहाँ लाभेश भी हैं और वेशी योग में हैं; उनका बल भरपूर है (9.86 रूप), हालाँकि अवस्था मृत है — इसलिए फल मिलेगा, पर पूरी गति से नहीं।
• **गुरु की दृष्टि** — ऊपर बताया, यह सबसे महत्वपूर्ण दृष्टि है।
• **केतु की दृष्टि** — केतु भाव 11 से पंचम को देख रहे हैं। केतु की दृष्टि पंचम पर हो तो संतान में थोड़ी देरी या विचित्र परिस्थितियाँ आ सकती हैं — पर यह रुकावट नहीं, एक भिन्न मार्ग है।

राहु पंचम भाव में बैठे हैं (धनु राशि, वक्री)। यह पंचम भाव की सबसे उल्लेखनीय स्थिति है। राहु की उपस्थिति संतान-सुख में विलंब या अप्रत्याशित मोड़ दे सकती है — कभी-कभी चिकित्सकीय प्रक्रिया, या किसी असामान्य परिस्थिति से संतान आती है। राहु वक्री हैं, जिसका अर्थ है उनका प्रभाव और गहरा है। **पर गुरु का बल और दृष्टि इस पर भारी पड़ती है** — राहु की उपस्थिति बाधा है, अवरोध नहीं।

अष्टकवर्ग और सप्तमांश (D7)

पंचम भाव के शोधित अष्टकवर्ग बिंदु **5 हैं** — यह साधारण स्तर है, यानी इस भाव में गोचर का शुभ फल सहज नहीं मिलता, प्रयास और सही समय दोनों चाहिए।

सप्तमांश (D7) में — जो संतान-विचार की विशेष कुंडली है — लग्न धनु है, और **गुरु लग्न भाव में ही बैठे हैं** (धनु राशि)। यह D7 में गुरु की अत्यंत बलवान स्थिति है। D1 और D7 — दोनों में गुरु लग्न में हैं; यह दोहरी पुष्टि संतान-योग को **प्रबल** बनाती है।

मुख्य बातें

- **पंचमेश और संतान-कारक दोनों गुरु हैं** — बलवान, युवा अवस्था में, लग्न में बैठे और पंचम पर दृष्टि डालते हुए।
- **राहु पंचम में बैठे हैं** — इससे विलंब या असामान्य परिस्थिति संभव है, पर गुरु का बल इसे संतुलित करता है।
- **D7 में गुरु लग्न में** — संतान-योग की दोहरी और प्रबल पुष्टि।
- पंचम भाव के शोधित बिंदु 5 (साधारण) — सही समय और प्रयास दोनों आवश्यक।
- **गुरु की पंचम पर दृष्टि** — शास्त्र में पंचमेश का अपने भाव को देखना शुभ संकेत है।

॥ शास्त्र-प्रमाण ॥

पुत्रस्थानाधिपे स्वोच्चे लग्नाद्वा द्वित्रिकोणगे ।
गुरुणा संयुते दृष्टे पुत्रभाग्यमुपैति सः ॥

पंचम भाव का स्वामी उच्च का हो या लग्न से त्रिकोण में हो, और उस पर गुरु की युति या दृष्टि हो — तो संतान का सौभाग्य मिलता है।

— बृहत् पाराशर होरा शास्त्र, अध्याय १६

❖ ✦ ❖

संतान-प्राप्ति के शुभ योग

अ ध्या य 3

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली में संतान-प्राप्ति के कई सशक्त संकेत एक साथ मिलते हैं। पंचमेश गुरु का लग्न में बैठना और उनकी पंचम भाव पर सीधी दृष्टि — यह संयोग संतान-योग को मज़बूत आधार देता है।

पंचमेश और कारक — दोनों एक ही ग्रह

आपकी कुंडली में पंचम भाव धनु राशि में है, जिसके भावेश गुरु हैं। और गुरु संतान के नैसर्गिक कारक भी हैं। **भावेश और कारक — दोनों एक ही ग्रह होना, यह संतान-योग की दृष्टि से विशेष रूप से शुभ संकेत है।** गुरु लग्न (सिंह राशि, भाव 1) में मित्र राशि में बैठे हैं और उनकी पाँचवीं दृष्टि सीधे पंचम भाव (धनु) पर पड़ रही है — यानी वे अपने ही घर को देख रहे हैं। पराशरी परंपरा में भावेश का अपने भाव को देखना, भाव में बैठने के बराबर फलदायी माना गया है।

सूर्य और केतु की दृष्टि

सूर्य भाव 11 (मिथुन) में बैठे हैं और उनकी दृष्टि पंचम भाव पर पड़ रही है। केतु भी भाव 11 से पंचम भाव को देख रहे हैं। **सूर्य की दृष्टि पंचम भाव पर पुत्र-पक्ष को बल देती है** — यह परंपरागत मान्यता है। साथ ही राहु पंचम भाव (धनु) में बैठे हैं — यह बात ध्यान देने योग्य है। राहु पंचम में होने से संतान में कुछ विलंब या जटिलता आ सकती है, पर यह अंतिम बाधा नहीं। **गुरु की सशक्त दृष्टि राहु के इस प्रभाव को काफ़ी हद तक संभाल लेती है।**

सप्तमांश (D7) — संतान की विशेष कुंडली

सप्तमांश (D7) संतान-सुख की गहराई बताने वाली वर्ग-कुंडली है। इसमें धनु लग्न है और **गुरु लग्न (भाव 1) में ही बैठे हैं** — यह सप्तमांश में गुरु का लग्न-स्थित होना अत्यंत शुभ संकेत देता है। शुक्र और राहु भाव 2 (मकर) में हैं, सूर्य भाव 1 (धनु) में — लग्न पर तीन ग्रहों का जमाव सप्तमांश को बलशाली बनाता है। D7 में भाव 8 में केतु ज़रूर हैं, पर लग्नेश गुरु का लग्न में ही होना इस कुंडली को कमज़ोर नहीं कहने देता।

गजकेसरी योग का विशेष प्रभाव

आपकी कुंडली में गजकेसरी योग बन रहा है — चंद्र से केंद्र में गुरु। **गजकेसरी योग यश, बुद्धि और पारिवारिक सुख देता है, और यही गुरु पंचमेश भी हैं** — इसलिए यह योग संतान-सुख की दिशा में भी अनुकूल माना जाएगा। पंचम भाव (धनु, शोधित बिंदु 5 — साधारण) मध्यम बल का है, अर्थात् फल मिलने में थोड़ा धैर्य चाहिए, पर रुकेगा नहीं।

मुख्य बातें

- पंचमेश और संतान-कारक — दोनों गुरु, और वे लग्न में मित्र राशि में बैठे हैं
- गुरु की पाँचवीं दृष्टि सीधे पंचम भाव पर — भावेश अपने भाव को देख रहे हैं
- सप्तमांश (D7) में भी गुरु लग्न में — संतान-कुंडली बलवान
- राहु पंचम में हैं, जो विलंब दे सकते हैं — पर गुरु की दृष्टि उन्हें सँभाल रही है
- समग्र योग संतान-प्राप्ति के पक्ष में हैं; समय की बात अगले अध्याय में

अभय शर्मा जी, 34 वर्ष की आयु में यह प्रश्न स्वाभाविक और समयोचित है। दशा, गोचर और वर्तमान परिस्थितियों को मिलाकर देखने पर कुछ स्पष्ट अवधियाँ सामने आती हैं।

अभी की दशा — क्या कह रही है?

अभी **सूर्य महादशा / शनि अंतर्दशा** चल रही है (फ़रवरी 2026 से फ़रवरी 2027)। शनि षष्ठेश हैं और भाव 6 में स्वराशि में वक्री बैठे हैं — यह दुःस्थानेश की अंतर्दशा है। ऐसे समय में "विस्तार या नई शुरुआत" के बजाय "धैर्य और तैयारी" का संदेश अधिक सटीक है। **यह**

अंतर्दशा फ़रवरी 2027 तक है — इस बीच परिणाम की प्रतीक्षा करें, चिंता नहीं।

फ़रवरी 2027 के बाद — बुध अंतर्दशा

फ़रवरी 2027 से **सूर्य–बुध अंतर्दशा** आरंभ होगी (दिसम्बर 2027 तक)। बुध द्वादश और एकादश भाव के स्वामी हैं — यह अंतर्दशा भी संतान के प्रत्यक्ष कारण नहीं। पर यह समय मानसिक तैयारी, उपचार की जाँच, और ज़रूरी क़दम उठाने का है।

दिसम्बर 2027 — केतु अंतर्दशा और अप्रैल 2028 — शुक्र अंतर्दशा

दिसम्बर 2027 से अप्रैल 2028 तक सूर्य–केतु अंतर्दशा रहेगी। केतु भाव 11 में हैं और पंचम भाव को देख रहे हैं — केतु का पंचम पर दृष्टि-संबंध एक संकेत है। उसके बाद **अप्रैल 2028 से अप्रैल 2029 तक सूर्य–शुक्र अंतर्दशा** है। शुक्र दशम और तृतीय भाव के स्वामी हैं, अभी अस्त हैं — इस अंतर्दशा में भी मिश्रित फल की संभावना है।

अप्रैल 2029 के बाद — चंद्र महादशा, सबसे महत्वपूर्ण मोड़

अप्रैल 2029 से चंद्र महादशा आरंभ होगी — और यह सबसे महत्वपूर्ण संकेत है। चंद्र भाव 4 में हैं और वे द्वादशेश हैं। पर चंद्र कुंडली से देखें तो गुरु भाव 10 में हैं और पंचम-एकादश पर दृष्टि पड़ती है। चंद्र महादशा की पहली अंतर्दशा भी चंद्र की ही होगी — **यह अप्रैल 2029 से आरंभ होगी, जब आप लगभग 37 वर्ष के होंगे।** यह अवधि जीवन में पारिवारिक और भावनात्मक परिपक्वता का समय लाती है।

गोचर गुरु — जनवरी 2027 तक की खिड़की

अभी गोचर गुरु सिंह राशि (लग्न, भाव 1) में हैं और 25 जनवरी 2027 तक यहीं रहेंगे। ऊपर बताया — गोचर गुरु की पंचम पर दृष्टि है। यह अवधि संतान के संदर्भ में ज्योतिषीय रूप से सक्रिय है। **नवम्बर 2026 से जनवरी 2027 की यह खिड़की, इस विषय पर विशेष ध्यान देने और आवश्यक क़दम उठाने का समय है।** शोधित अष्टकवर्ग में गुरु के गोचर-भाव (भाव 1) में बिंदु 4 हैं — साधारण, पर रोकने वाला नहीं।

गोचर शनि — एक बात ध्यान में रखें

गोचर शनि अभी मीन राशि, भाव 8 में हैं और 11 दिसम्बर 2026 को मार्गी होंगे। **शनि की दृष्टि मंगल (पंचम के भाव से संबंधित) और शुक्र पर पड़ रही है** — यह थोड़ा दबाव का संकेत है। पर जून 2027 तक शनि मेष में जाएँगे, जो भाव 9 होगा — उस समय से दबाव घटेगा।

तीन पड़ाव — साफ़ तस्वीर

• **अभी से जनवरी 2027** — गोचर गुरु का पंचम पर सक्रिय असर; यह समय तैयारी और प्रयास का है
• **फ़रवरी 2027 से अप्रैल 2029** — सूर्य महादशा की शेष अंतर्दशाएँ; धैर्य व आवश्यक जाँच-उपाय जारी रखें
• **अप्रैल 2029 के बाद, लगभग 37 वर्ष की आयु** — चंद्र महादशा का आरंभ; पारिवारिक जीवन में नया अध्याय

मुख्य बातें

• अभी की शनि अंतर्दशा (फ़रवरी 2027 तक) धैर्य का समय है, चिंता का नहीं
• गोचर गुरु जनवरी 2027 तक लग्न में, पंचम पर दृष्टि — यह अवधि सक्रिय रूप से उपयोगी है
• **अप्रैल 2029 — चंद्र महादशा का आरंभ — यह सबसे महत्वपूर्ण मोड़ है** (आयु लगभग 37 वर्ष)
• दोनों दशा-पद्धतियाँ (विंशोत्तरी और योगिनी) इस समय अलग-अलग इशारा कर रही हैं — इसलिए कोई एक तिथि पर नहीं अड़ना, समग्र दिशा देखनी है
• कुंडली में संतान-योग है — समय लग सकता है, पर आशा का पूरा आधार है

❖ ✦ ❖

गुरु व पंचमेश — संतान-कारक का बल

अ ध्या य 4

गुरु इस कुंडली के सबसे महत्वपूर्ण ग्रह हैं — पंचमेश भी, कारक भी। उनका बल जाँचना यहाँ सबसे ज़रूरी काम है।

षड्बल — गुरु का वास्तविक बल

गुरु का षड्बल **9.49 रूप** है, जबकि पराशर की न्यूनतम अपेक्षा 6.5 रूप की है। **गुरु इस कुंडली में अपेक्षित बल से काफ़ी ऊपर हैं** — यह बल उनके फल की मात्रा और समय-सीमा दोनों को अनुकूल बनाता है। अवस्था **युवा** है — और युवा अवस्था में ग्रह अपना पूरा फल देता है। यह संयोग — भरपूर बल और युवा अवस्था — दोनों एक साथ, **यह इस कुंडली की सबसे बड़ी शक्ति है।** इसीलिए गुरु के जो भी संकेत हैं — संतान, भाग्य, धर्म, ज्ञान — वे आधे-अधूरे नहीं, पूरे मिलने की संभावना है।

जन्म-कुंडली में स्थिति

गुरु सिंह राशि (भाव 1) में हैं — मित्र राशि। लग्न में बैठा बलवान गुरु, जो पंचमेश भी हो, यह संतान-कारकत्व के लिहाज़ से बहुत अनुकूल योग है। **गुरु की दृष्टियाँ भाव 5, भाव 7 और भाव 9 पर पड़ रही हैं** — संतान (5), विवाह-साझेदारी (7) और भाग्य (9) — तीनों पर एक साथ। इस तरह गुरु तीन महत्वपूर्ण भावों को एक साथ सँवार रहे हैं।

नवांश (D9) में गुरु

नवांश में गुरु कन्या राशि (भाव 1 — नवांश लग्न) में हैं। **D9 में गुरु का लग्न में होना वर्गोत्तम के समान बल देता है** — इससे जन्म-कुंडली में गुरु की भूमिका और पक्की होती है। यह संकेत है कि गुरु का फल टिकाऊ और गहरा होगा।

राहु का संग और गुरु की सुरक्षा

पंचम भाव में राहु बैठे हैं। राहु का पंचम में होना संतान में अनिश्चितता या विलंब का संकेत देता है — यह बात छिपाना उचित नहीं। **पर राहु अकेले नहीं हैं — गुरु की सीधी दृष्टि पंचम पर है।** शास्त्र में गुरु की दृष्टि को राहु के प्रभाव को कम करने वाला माना गया है। भाव-बल भी देखें: पंचम भाव का बल **10.24** है — यह मध्यम-अच्छा है, अर्थात् भाव पूरी तरह दुर्बल नहीं।

गोचर गुरु — अभी की स्थिति

आज (18 नवम्बर 2026) गोचर के गुरु **सिंह राशि, भाव 1** में हैं। **गोचर गुरु ठीक आपके लग्न में आए हैं, जहाँ जन्म के गुरु भी बैठे हैं** — यह गुरु का अपनी ही जगह लौटना है। गोचर गुरु की दृष्टि पंचम भाव पर पड़ रही है (नियम से गुरु की 5वीं दृष्टि भाव 5 पर)। यह संयोग 25 जनवरी 2027 तक रहेगा — इस अवधि में गुरु का पंचम पर दोहरा प्रभाव है।

मुख्य बातें

- गुरु — षड्बल 9.49 रूप (न्यूनतम से बहुत ऊपर), युवा अवस्था — पूरा फल देने में सक्षम
- जन्म-कुंडली और नवांश दोनों में गुरु लग्न में — असाधारण बल
- गुरु की दृष्टि भाव 5, 7, 9 — तीनों पर एक साथ
- राहु का पंचम में होना विलंब-सूचक है, पर गुरु की दृष्टि उसे संतुलित कर रही है
- गोचर गुरु अभी लग्न में, पंचम पर दृष्टि — जनवरी 2027 तक यह विशेष काल है

❖ ✦ ❖

संतान-प्राप्ति का शुभ समय (दशा-गोचर)

अ ध्या य 5

❖ ✦ ❖

विलंब के योग व सँभलने की राह

अ ध्या य 6

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली में संतान-सुख के स्पष्ट योग हैं — यह पहले देख चुकी हूँ। पर कुछ ग्रह-स्थितियाँ ऐसी हैं जो इस सुख में थोड़ी देर करा सकती हैं, और उन्हें जानना ज़रूरी है ताकि आप सही समय पर सही क़दम उठा सकें।

राहु पंचम भाव में — सबसे बड़ा कारण

आपके पंचम भाव (धनु) में राहु विराजमान हैं। पंचम भाव संतान का मूल घर है, और यहाँ राहु की उपस्थिति संतान-प्राप्ति में अनिश्चितता व विलंब का सबसे प्रमुख कारण बनती है। राहु वक्री हैं — उनका प्रभाव और भी अप्रत्याशित होता है। इसके साथ सूर्य की दृष्टि पंचम भाव पर पड़ रही है, जो कुछ सहायता देती है; और गुरु की दृष्टि भी पंचम पर है — यह राहु के दुष्प्रभाव को काफ़ी हद तक संभाल लेती है। पर राहु की उपस्थिति को नकारा नहीं जा सकता।

बुध व शुक्र — द्वादश भाव में

पंचमेश गुरु तो लग्न में बलवान हैं, पर कुंडली में बुध और शुक्र दोनों द्वादश भाव (कर्क) में हैं — और शुक्र अस्त भी हैं (मृत अवस्था)। शुक्र संतान-सुख व गृहस्थी के कारक हैं; उनका द्वादश में अस्त होना दाम्पत्य-जीवन में कुछ तनाव और संतान में देरी का संकेत देता है। **गुरु की ताक़त इसे संभाल लेती है, पर धैर्य ज़रूरी है।**

सप्तमांश (D7) क्या कह रहा है

संतान की विशेष कुंडली — सप्तमांश (D7) — में लग्न धनु है और गुरु स्वयं लग्न में बैठे हैं। यह अत्यंत शुभ संकेत है। पर D7 में चंद्र द्वादश भाव में हैं — मन में बेचैनी और प्रतीक्षा का भाव बना रह सकता है। **D7 का लग्न-गुरु यह पक्का कर देता है कि संतान का योग है — देर हो सकती है, पर रुकावट स्थायी नहीं।**

कब से अनुकूल समय

अभी सूर्य महादशा / शनि अंतर्दशा चल रही है (फ़रवरी 2027 तक)। शनि षष्ठेश हैं — यह संतान के लिए बाधक काल है, इसमें धैर्य रखें। **फ़रवरी 2027 से सूर्य–बुध अंतर्दशा आएगी, और मई 2025 से फ़रवरी 2026 की सूर्य–गुरु अंतर्दशा की तरह बुध भी पंचम भाव को सक्रिय करते हैं।** इससे भी अधिक महत्वपूर्ण — गोचर गुरु अभी सिंह राशि में आपके लग्न में हैं और पंचम भाव पर उनकी सीधी दृष्टि है। यह दृष्टि अक्टूबर 2026 से जनवरी 2027 तक सक्रिय है — यह समय अत्यंत अनुकूल है।

मुख्य बातें

- पंचम में राहु विलंब का मुख्य कारण; पर गुरु की दृष्टि सुरक्षा देती है
- शुक्र का अस्त होना गृहस्थी में थोड़ी जटिलता देता है — धैर्य रखें
- D7 में गुरु का लग्न में होना — संतान-योग पक्का
- शनि अंतर्दशा (फ़रवरी 2027 तक) कठिन; उसके बाद बुध अंतर्दशा अनुकूल
- गोचर गुरु की पंचम पर दृष्टि — अभी का यह समय सबसे महत्वपूर्ण

❖ ✦ ❖

संतान का स्वभाव व उज्ज्वल भविष्य

अ ध्या य 7

आपकी संतान के स्वभाव और भविष्य का संकेत मुख्यतः आपके पंचम भाव, उसमें स्थित ग्रह, पंचमेश गुरु और सप्तमांश (D7) से मिलता है। यह चित्र बड़ा उत्साहजनक है।

पंचम भाव धनु — उत्साह व जिज्ञासा

धनु राशि का पंचम भाव संतान के स्वभाव में उत्साह, जिज्ञासा, स्वतंत्र सोच और धर्म-दर्शन की रुचि देता है। गुरु की ऊर्जा यहाँ बह रही है — इसलिए संतान में एक सहज बड़प्पन और नेतृत्व का भाव होगा। **धनु राशि के बच्चे खुले विचार, यात्राप्रेमी और सत्य की तलाश में रहने वाले होते हैं।**

राहु पंचम में — असाधारण प्रतिभा

राहु का पंचम में होना विलंब तो देता है (ऊपर देखा), पर यह संतान के स्वभाव में एक असाधारण विशेषता भी जोड़ता है। **राहु की संतान अपने युग से आगे सोचती है** — तकनीक, नवाचार, या किसी अनूठे क्षेत्र में अपनी पहचान बनाती है। यह बच्चा भीड़ से अलग रास्ता चुनेगा।

D7 में गुरु लग्न में — असाधारण बल

सप्तमांश में गुरु का लग्न में होना — और साथ में शनि भी धनु लग्न में — यह संयोग बताता है कि संतान में अनुशासन और बुद्धि दोनों होंगे। D7 में शुक्र और राहु द्वितीय भाव (मकर) में हैं — यह धन व संसाधनों की पकड़ देता है। **आपकी संतान आर्थिक रूप से स्वावलंबी और दृढ़ निश्चयी होगी।**

D7 में मंगल एकादश — उपलब्धि का संकेत

D7 में मंगल एकादश भाव (तुला) में हैं — यह लाभ और उपलब्धि का घर है। संतान में पराक्रम और लक्ष्य-प्राप्ति की ललक होगी। खेल, प्रतियोगिता, या किसी ऐसे क्षेत्र में जहाँ साहस चाहिए — वहाँ यह बच्चा आगे रहेगा।

गजकेसरी योग का प्रभाव

आपकी कुंडली में गजकेसरी योग है — गुरु और चंद्र का यह विशेष संबंध न केवल आपको, बल्कि आपकी संतान के जीवन को भी प्रभावित करता है। परिवार का यश और संस्कार अगली पीढ़ी को मिलते हैं — आपकी संतान एक सुसंस्कृत, यशस्वी परिवार का हिस्सा होगी।

मुख्य बातें

- धनु पंचम — जिज्ञासु, स्वतंत्र सोच, धर्म-दर्शन में रुचि
- राहु पंचम — असाधारण, अपने समय से आगे सोचने वाली संतान
- D7 में गुरु लग्न में — बुद्धि और अनुशासन दोनों
- D7 में मंगल एकादश — उपलब्धि व पराक्रम
- गजकेसरी योग का आशीर्वाद संतान तक पहुँचेगा

॥ शास्त्र-प्रमाण ॥

गजकेसरीसञ्जातस्तेजस्वी धनवान् भवेत् ।
मेधावी गुणसम्पन्नो राजप्रियकरो नरः ॥

गजकेसरी योग में जन्मा व्यक्ति तेजस्वी और धनवान होता है, बुद्धिमान और गुणों से भरा — तथा बड़े लोगों का प्रिय बनता है।

— बृहत् पाराशर होरा शास्त्र, अध्याय ३६

❖ ✦ ❖

संतान से स्नेह-संबंध व सुख

अ ध्या य 8

अभय शर्मा जी, संतान का जन्म एक पड़ाव है — पर उससे आजीवन स्नेह और सुख का रिश्ता बनाना, यह अलग विद्या है। आपकी कुंडली में यह रिश्ता कैसा रहेगा, इसके संकेत बहुत आशावादी हैं।

गुरु लग्न में — पिता का स्नेह

पंचमेश गुरु आपके लग्न (स्वयं का भाव) में बैठे हैं — यह बताता है कि आप और आपकी संतान का स्वभाव बहुत मिलता-जुलता होगा। **जब भावेश लग्न में आता है, तो उस भाव का विषय (संतान) आपके व्यक्तित्व का हिस्सा बन जाता है।** आप स्वाभाविक रूप से अच्छे माता-पिता की भूमिका में फिट बैठेंगे। गुरु युवा अवस्था में हैं और उनका षड्बल 9.49 रूप — यह बल भरपूर है, इसलिए यह स्नेह गहरा और टिकाऊ होगा।

पंचम भाव पर गुरु की दृष्टि

गुरु की पंचम भाव पर सीधी दृष्टि — और साथ ही सूर्य की भी — यह दोहरा आशीर्वाद है। **गुरु की दृष्टि संतान से संबंध में गुरु-शिष्य का भाव लाती है** — आप केवल माता-पिता नहीं, बच्चे के पहले गुरु भी होंगे। केतु की दृष्टि भी पंचम पर है — यह संतान से एक अलग, आध्यात्मिक या गहरे भावनात्मक जुड़ाव का संकेत देती है।

चंद्र का चतुर्थ भाव में होना

आपका चंद्र चतुर्थ भाव (वृश्चिक) में है — नीच ज़रूर है, पर केमद्रुम भंग योग के कारण दोष लागू नहीं होता। चतुर्थ भाव घर, सुख और मन का घर है। **इसका अर्थ है कि आपका घर भावनात्मक रूप से गहरा होगा** — और जब संतान आएगी, तो घर का यह भावनात्मक गहरापन उसे भी मिलेगा। गोचर में अभी शनि मीन राशि से आपकी चंद्र राशि (वृश्चिक) के पंचम भाव में हैं — यह संतान के विषय में मन में थोड़ी चिंता दे सकता है, पर शनि दिसंबर 2026 में मार्गी होंगे, जिससे यह दबाव धीरे-धीरे कम होगा।

मुख्य बातें

- पंचमेश गुरु का लग्न में होना — संतान आपके व्यक्तित्व का विस्तार बनेगी
- गुरु की पंचम पर दृष्टि — गुरु-शिष्य जैसा गहरा, शिक्षाप्रद रिश्ता
- केतु की दृष्टि — संतान से आध्यात्मिक व भावनात्मक जुड़ाव
- चतुर्थ भाव का चंद्र — भावनात्मक गहराई वाला घर बनेगा
- गोचर शनि दिसंबर 2026 के बाद मार्गी — मन की बेचैनी उसके बाद कम होगी

❖ ✦ ❖

आशा, धैर्य व संतुलित दृष्टि

अ ध्या य 9

अभय शर्मा जी, यह अध्याय इसलिए लिख रही हूँ क्योंकि संतान का प्रश्न जब मन में हो, तो ज्योतिष की हर बात — योग भी और विलंब भी — मन पर भारी असर करती है। इसलिए पहले यह कहना ज़रूरी है: **आपकी कुंडली में संतान-सुख का योग स्पष्ट और बलवान है।** यह बात किसी उम्मीद पर नहीं, गणना पर टिकी है।

जो है, उसे ठीक से देखें

पंचमेश गुरु — जो संतान के कारक भी हैं और भावेश भी — आपके लग्न में युवा अवस्था में बैठे हैं। उनका षड्बल 9.49 रूप है, जो पराशर की न्यूनतम अपेक्षा से कहीं ऊपर है। **यह बल किसी भी सामान्य कुंडली से अधिक है।** इसके साथ पंचम भाव पर गुरु की सीधी दृष्टि, सूर्य की दृष्टि, और केतु की दृष्टि — तीन ग्रहों का ध्यान एक ही भाव पर है।

विलंब को दोष नहीं, संकेत समझें

राहु का पंचम भाव में बैठना विलंब का संकेत देता है — पर यह "नहीं होगा" नहीं कहता। शास्त्र में ऐसी स्थिति के लिए कहा गया है कि राहु पंचम में हो और गुरु बलवान हों, तो संतान में देरी हो सकती है, पर सुख मिलता है। **34 वर्ष की आयु में यह प्रश्न उठाना बिल्कुल सही समय है** — न जल्दी, न देर।

संतुलित दृष्टि का अर्थ

संतुलित दृष्टि का अर्थ है — न इतनी उम्मीद कि हर महीना परीक्षा बन जाए, न इतनी निराशा कि मन टूट जाए। **अप्रैल 2029 से चंद्र महादशा आरंभ होगी** — तब आपकी आयु लगभग 36-37 वर्ष होगी। उससे पहले सूर्य–बुध अंतर्दशा (फ़रवरी 2027 से दिसम्बर 2027) और सूर्य–शुक्र अंतर्दशा (अप्रैल 2028 से अप्रैल 2029) भी संतान के विषय में उल्लेखनीय हैं। यानी **2027 से 2030 का काल सबसे अनुकूल खिड़की है।**

मुख्य बातें

- गुरु का बल और अवस्था दोनों अच्छे हैं — योग कमज़ोर नहीं
- राहु विलंब देते हैं, रोक नहीं लगाते — यह अंतर महत्वपूर्ण है
- 2027 से 2030 के बीच सबसे अनुकूल दशा-गोचर का संयोग है
- इस समय मन को स्थिर रखना ही सबसे बड़ा काम है

❖ ✦ ❖

संतान-सुख हेतु ज्योतिषीय उपाय

अ ध्या य 1 0

अभय शर्मा जी, उपाय तभी काम करते हैं जब वे आपकी अपनी कुंडली से निकले हों — सबको दिए जाने वाले नहीं। यहाँ तीन ग्रह सबसे महत्वपूर्ण हैं: **गुरु** (पंचमेश व संतान-कारक), **राहु** (पंचम भाव में बैठे, विलंब का कारण), और **सूर्य** (चल रही महादशा के स्वामी, जिनकी अवस्था मृत है)।

पहला — ग्रह के साथ चलना (सबसे टिकाऊ उपाय)

गुरु के साथ चलें:
गुरु संयम और विस्तार का ग्रह है। उनके साथ चलने का अर्थ है —
• रोज़ कुछ पढ़ना जो मन को बड़ा करे — धर्म, दर्शन, या कोई भी ऐसा विषय जो आपको प्रिय हो
• किसी को सिखाने में समय लगाना — छोटे बच्चों के साथ समय बिताना, उनकी सहायता करना
• भोजन और वाणी में संयम — गुरु बिना संयम के बिखर जाते हैं
• **गुरुवार को किसी ज़रूरतमंद को पीला अन्न या चने की दाल दान करें** — यह गुरु का दान है

राहु को साधें:
राहु पंचम में हैं — इनकी उलझन घटाने का सबसे अच्छा तरीका है नियम और अनुशासन। बड़े-बड़े सपनों को छोटे क़दमों में बाँटना, स्क्रीन का समय घटाना, और घर में साफ़-सफ़ाई व शांति बनाए रखना — यह राहु को सधाता है।

दूसरा — मंत्र-जप

गुरु मंत्र:
"ॐ बृं बृहस्पतये नमः"
गुरुवार को प्रातःकाल 108 बार जप करें। यह पंचमेश व संतान-कारक दोनों को एक साथ बल देता है।

सूर्य मंत्र (दशानाथ के लिए):
"ॐ घृणि सूर्याय नमः"
रविवार को सूर्योदय के समय 108 बार। सूर्य की अवस्था मृत है — इनकी महादशा चल रही है, इसलिए इनका सहयोग लेना ज़रूरी है। साथ में आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ भी कर सकते हैं — श्रद्धा से करने पर मन को बल और राहत मिलती है।

तीसरा — व्रत

गुरुवार का व्रत — गुरु-देव के लिए। यह व्रत पंचमेश को बल देता है और संतान-योग को जगाता है।

चौथा — रत्न

आपके जीवन-रत्न माणिक, मूँगा और पुखराज हैं। इस समय **माणिक** सबसे उपयुक्त है — यह दशानाथ सूर्य का रत्न है और आपका जीवन-रत्न भी।

पुखराज (गुरु का रत्न) पंचमेश को सीधा बल देता है — और गुरु की युवा अवस्था व भरपूर बल को देखते हुए यह संतान के विषय में विशेष रूप से उपयुक्त है।

• पुखराज: सोने में, तर्जनी उँगली में, गुरुवार को धारण करें — कम से कम 5 रत्ती
• माणिक: सोने या ताँबे में, अनामिका उँगली में, रविवार को धारण करें — कम से कम 3 रत्ती

ये रत्न आप हमारे अपने कौस्तुभ जेम्स (koustubhgems.com) से ले सकते हैं — वहाँ हर पत्थर प्रयोगशाला-प्रमाणित और सील-बंद पैकिंग में आता है। चाहें तो कहीं और से भी लें, बस प्रमाण-पत्र ज़रूर देखें।

मुख्य बातें

• गुरु मंत्र + गुरुवार व्रत + पुखराज — तीनों पंचमेश को एक ही दिशा में बल देते हैं
• सूर्य मंत्र + माणिक — दशानाथ को जगाने के लिए
• राहु को साधना दिनचर्या से होगा, न किसी अलग उपाय से
• उपाय तभी फल देते हैं जब नियमित हों — एक महीना नहीं, कम से कम एक वर्ष तक करें

॥ शास्त्र-प्रमाण ॥

यस्य यश्च यदा दुःस्थः स तं यत्नेन पूजयेत् ।
एषां धात्रा वरो दत्तः पूजिताः पूजयिष्यथ ॥

जिसका जो ग्रह पीड़ित हो, वह यत्नपूर्वक उसकी उपासना करे। ब्रह्मा ने ग्रहों को वर दिया है — "पूजित होकर तुम भी पूजक का मान रखोगे।"

— बृहत् पाराशर होरा शास्त्र, अध्याय ८४

❖ ✦ ❖

इस रिपोर्ट का निचोड़

अ ध्या य 1 1

इस पूरी रिपोर्ट में जो सबसे बड़ी बात उभरकर आई, वह यह है: **आपकी कुंडली में संतान-सुख का योग है — और वह योग कमज़ोर नहीं, बल्कि गुरु की युवा अवस्था व भरपूर बल से पक्का है।**

तीन सबसे बड़ी बातें

• **पंचमेश गुरु बलवान हैं** — युवा अवस्था में, लग्न में, पंचम पर सीधी दृष्टि के साथ। यह संतान-योग का सबसे ठोस आधार है।
• **राहु विलंब देते हैं, रोक नहीं** — पंचम में राहु हों और गुरु बली हों, तो संतान में देरी होती है पर सुख मिलता है। 2027 से 2030 का काल — सूर्य–बुध, सूर्य–शुक्र और फिर चंद्र महादशा का आरंभ — इस यात्रा का सबसे अनुकूल समय है।
• **सप्तमांश (D7) में गुरु लग्न में हैं** — जन्म-कुंडली और सप्तमांश दोनों में गुरु का बल मिलना, संतान-सुख की गणना को और पक्का करता है।

सबसे ज़रूरी एक उपाय

गुरुवार को "ॐ बृं बृहस्पतये नमः" का 108 बार जप और पुखराज धारण — यह एक उपाय पंचमेश, संतान-कारक और इस समय की सबसे ज़रूरी दिशा को एकसाथ साधता है।

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली को देखकर मन को एक शांति मिलती है — योग हैं, बल है, और समय भी अनुकूल आ रहा है। जो देरी है, वह आपकी कमज़ोरी नहीं — ग्रहों की अपनी चाल है, और वह बदलती है। आप धैर्य रखें, उपाय नियमित करें, और इस यात्रा में एक-दूसरे का साथ बनाए रखें — यही सबसे बड़ी तैयारी है। आपके घर में संतान की किलकारी गूँजे, यही आशीर्वाद है।

> ⚠ यह रिपोर्ट वैदिक ज्योतिष पर आधारित संवेदनशील मार्गदर्शन है, चिकित्सकीय सलाह नहीं। संतान संबंधी चिकित्सा हेतु योग्य चिकित्सक से परामर्श लें।

॥ ॐ शुभम् ॥